

पतरस ह ए दूसरा चट्टी ला अपन जनिगी के आखीरी समय म लिखिसि। अधियाय 3:1 म ओह कहथि कि एह ओकर दूसरा चट्टी ए। ओह कतको कलीसियामन के मसीहीमन ला, ए चट्टी लिखे हवय। ए चट्टी लिखे के खास उद्देश्य लबरा गुरू अऊ ओमन के सकिछा के बरिध करना ए। परमेसर अऊ परभू यीसू मसीह के सच्चा गियान म बने रहय म ही ए समस्या के नदिन होथे। ए सच्चा गियान ओ मनखेमन के दुवारा लाय गीस, जऊन मन यीसू मसीह ला देखे रहिन अऊ ओकर सकिछा ला सुने रहिन। ए चट्टी के लिखइया ह ओ मनखेमन के सकिछा के बारे म फकिर करत रहिसि, जऊन मन ए कहंय कि मसीह ह फेर नई आवय। ओह कहथि कि मसीह के अवई म बेर हवय, काबरका परमेसर नई चाहय कि कोनो नास होवय, पर हर एक झन ला पछताप करे के मऊका मिलिय। ए चट्टी ला खाल्हे लिखे भाग म बांटे जा सकथे।

जोहार 1:1-2

मसीही बुलावा 1:3-21

लबरा गुरू 2

यीसू के फेर अवई 3

1 ए चट्टी समोन पतरस के तरफ ले, जऊन ह यीसू मसीह के एक सेवक अऊ प्रेरित ए-

ओमन ला जऊन मन हमर परमेसर अऊ उद्धार करइया यीसू मसीह के धरमीपन के दुवारा हमरेच सही कीमती बसिवास ला पाय हवय:

2 तुमन ला परमेसर अऊ यीसू हमर परभू के गियान के जरयि, अनुग्रह अऊ सांति बहुतायत ले मिलिय।

बुलावा अऊ चुनाव के नसिचयता

3 परमेसर के ईसवरीय सामरथ ह हमन ला ओ जम्मो चीज दे हवय, जेकर जरूरत हमन ला जनिगी अऊ भक्ति खातिर होथे अऊ एह हमन ला ओकर बारे म हमर गियान के जरयि

मलि हवय, जऊन ह हमन ला अपन खुद के महिमा अऊ भलाई के दुवारा बलाय हवय। 4 एमन के जरयि, ओह हमन ला अपन बहुंत महान अऊ कीमती परतगियां दे हवय, ताकि ओमन के जरयि, तुमन ईसवरीय सुभाव म सहभागी होवव, अऊ ओ बुरई के काम ले बच जावव, जऊन ह संसार म हवय अऊ खराप लालसा ले आयथे।

5 एकरे कारन, तुमन हर किसिम ले, कोससि करके अपन बसिवास म भलाई; अऊ भलाई म गियान; 6 अऊ गियान म संयम; अऊ संयम म भक्ति; 7 अऊ भक्ति म भाई-चारा के दया; अऊ भाई-चारा के दया म मया जोड़त जावव। 8 काबरका कहूं ए गुन तुमन म रहथि अऊ एमन बढ़त जाथे, त एमन तुमन ला हमर परभू यीसू मसीह के गियान म नठिल्ला अऊ असफल नई होवन देवय। 9 पर जेकर म ए गुन नई ए, ओला धुंधला दिखिथे अऊ ओह अंधरा ए, अऊ ओह भुला गे हवय कि ओह अपन पहिली के पाप ले धोवाके साफ हो गे हवय।

10 एकरसेति, हे मोर भाईमन, अपन बुलावा अऊ चुनाव ला नसिचति करे बर अऊ उत्सुक रहव, काबरका कहूं तुमन अइसने करहू, त तुमन अपन बसिवास ले कभू नई हटहू, 11 अऊ हमर परभू अऊ उद्धार करइया यीसू मसीह के सदाकाल के राज म तुम्हर जोरदार सुवागत होही।

परमेसर के बचन के अगमबानी

12 एकरसेति, मेंह तुमन ला हमेसा ए बातमन के सुरता करावत रहिहूं, हालाकि तुमन एमन ला जानथव अऊ ओ सच, जऊन ह तुम्हर करा हवय, ओम तुमन मजबूत हो गे हवव। 13 मेंह सोचथंय कि मोर बर एह उचिति ए कि जब तक मेंह जीयत हवव, तुम्हर सुरता ला ताजा करत रहव, 14 काबरका मेंह जानथंय कि मेंह ए देहें ला जल्दी छोड़ दूहू जइसने कि हमर परभू यीसू मसीह ह मोला बताय हवय। 15 अऊ मेंह ए बात के पूरा कोससि करहूं कि मोर मरे के बाद, तुमन ए बातमन ला हमेसा सुरता करव।

16जब हमन तुमन ला हमर परभू यीसू मसीह के सामरथ अऊ अवई के बारे बताएन, त हमन चतुरई ले गढ़े गय कहानीमन के नकल नई करेन, पर हमन यीसू के महिमा ला अपन आंखी ले देखे रहेंन। 17काबरकी ओह, परमेसर ददा ले आदर अऊ महिमा पाईस, जब विभिवसाली महिमा ले ओकर करा ए कहिके अवाज आईस, “एह मोर बेटा ए, जऊन ला मेंह मया करथंव; एकर ले मेंह बहुत खुस हवंव।” 18जब हमन पबतिर पहाड़ ऊपर ओकर संग रहेंन, त हमन खुद ए अवाज ला सुनेन, जऊन ह स्वरग ले आवत रहिसि।

19अऊ हमर करा अगमजानीमन के बचन हवय, जऊन ह ए बात ला अऊ मजबूत करसि। तुमन एकर ऊपर धियान देके बने करहू। काबरकी एह एक दीया सहीं अय, जऊन ह एक अधियार जगह म चमकत हवय, अऊ एह तब तक चमकथे, जब तक की दिन नई निकरय अऊ तुम्हर हरिदय म बहिनियां के तारा नई निकर आवय। 20सबले पहिली, तुमन ए बात ला जरूर समझ लेवव की परमेसर के बचन म बताय अगम के बात ह काकरो खुद के बचन नो हय। 21काबरकी अगमबानी के सुरात मनखे के ईछा ले कभू नई होईस, पर मनखेमन पबतिर आत्मा के अगुवई म, परमेसर कोर्ता ले बोलनि।

लबरा गुरूमन अऊ ओमन के बनिास

2 पर मनखेमन के बीच म लबरा अगमजानीमन घलो रहिन अऊ ओही कसिम ले तुम्हर बीच म लबरा गुरूमन होहीं। ओमन गुप्त रूप ले बनिासकारी लबारी सकिछा ला तुम्हर बीच म लानहीं, अऊ त अऊ ओमन सर्वसकृतिमान परभू के इनकार करहीं, जऊन ह ओमन ला बसियो हवय अऊ ए कसिम ले ओमन अपन ऊपर अचानक बनिास लानहीं। 2बहुते झन ओमन के खराप जनिगी के नकल करहीं, अऊ ओमन के कारन, सत के रसता के अनादर होही। 3अपन लालच म, ए गुरूमन अपन खुद के बनाय कथा-कहानी के दुवारा तुम्हर ले

फायदा उठाहीं। ओमन के दंड के फैसला बहुत पहिली हो चुके हवय, अऊ ओमन के बनिास नसिचय होही।

4जब परमेसर ह ओ स्वरगदूतमन ला नई छोड़िसि, जऊन मन पाप करे रहिन, पर ओमन ला अधियार के बंधना म रखके नरक पठो दीस, ताकी ओमन नियाय बर उहां बंदी रहंय। 5जब परमेसर ह पहिली जुग के संसार ला नई छोड़िसि, जब ओह जल-परलय ले भक्तिहीन मनखेमन ला नास करसि, पर ओह धरमीपन के परचारक—नूह अऊ सात झन आने मनखेमन ला बचाईस। 6अऊ जब सजा के रूप म, परमेसर ह सदोम अऊ अमोरा सहरमन ला जलाके राख कर दीस, अऊ एला एक नमूना के रूप म रखसि—ए देखाय बर की भक्तिहीन मनखेमन के का होवइया हवय; 7अऊ जब ओह धरमी मनखे लूत ला बचाईस, जऊन ह दुष्ट मनखेमन के खराप चाल-चलन के कारन बहुत दुःखी रहिसि 8(काबरकी ओ धरमी जन ह ओमन के बीच म रहत रहिसि अऊ ओमन के कुकरम ला देखके अऊ सुनके दिन ब दिन, अपन मन म पीरा के अनुभव करत रहिसि)— 9जब अइसने बात ए, तब परभू ह जानथे की धरमी मनखेमन ला परछिा म ले कइसने नकारथें अऊ अधरमीमन ला कइसने सजा देवत नियाय के दिन बर रखथें। 10एह खास करके, ओमन बर सही ए, जऊन मन अपन पापमय सुभाव के खराप ईछा के मुताबकि चलथें अऊ अधिकारीमन ला कुछ समझथें। ए मनखेमन हिमिमती अऊ ढीठ अंय अऊ ओमन महिमामय जीवमन के बदनामी करे बर नई डरंय; 11जबकी स्वरगदूत, जऊन मन जादा बलवान अऊ सकृतिसाली अंय, परभू के आघू म अइसने जीवमन के बरोध म बदनामी के दोस नई लगावंय। 12पर ए मनखेमन ओ बात के बदनामी करथें, जेला एमन समझंय नई। एमन जंगली पसुमन सहीं बगिर बुद्धी के जीव अंय, जऊन मन की सरिपि पकड़े जाय बर अऊ नास होय बर जनमे हवंय, अऊ ओमन पसु के सहीं नास घलो होहीं।

13जऊन हाना एमन करे हवय, ओकर परतफिल एमन ला मलिही। दिन-मंझनियां म खा-पीके मौज करई, एमन ला बने लगथे। एमन कलंकति अऊ दूसति अंय अऊ जब एमन तुम्हर संग जेवनार करथें, त अपन खुसी म मौज-मसूती करथें। 14एमन के आंखीमन छिनारीपन ले भरे हवय; एमन पाप करई कभू बंद नई करंय; एमन चंचल मनखेमन ला बहका लेथें; लालच म एमन ला महारथ हासलि हवय; एमन परमेसर दुवारा सरापति अंय। 15एमन सही रसता ला छोड़ दे हवय अऊ भटकके एमन बओर के बेटा—बलाम के रसता म हो ले हवय; जऊन ह गलत काम के बनी ला पसंद करसि। 16पर ओला ओकर गलत काम बर एक गदही ह दबकारसि। गदही जऊन ह एक पसु अय अऊ गोठियाय नई सकय, पर ओ गदही ह मनखे के अवाज म गोठियाईस अऊ ओ अगमजानी के बईहापन ला रोकसि।

17ए मनखेमन बगिर पानी के सोत सहीं अंय; एमन गरेर ले उड़ाय गय बादर अंय। घोर अंधियार ह एमन बर रखे गे हवय। 18काबरका एमन जुछा अऊ घमंड ले भरे बात करथें अऊ अपन पापी सुभाव के छिनारी ईछा के दुवारा ओ मनखेमन ला फंसाथें, जऊन मन गलत काम करइयामन के संगती ला छोड़के आय हवय। 19एमन ओमन ले सुतंतरता के वायदा करथें, जबका एमन खुद भ्रस्ट जनिगी के गुलाम अंय, काबरका जऊन चीज ह मनखे ऊपर काबू पा लेथे, मनखे ह ओ चीज के गुलाम हो जाथे। 20कहूं ओमन हमर परभू अऊ उद्धार करइया यीसू मसीह ला जाने के दुवारा संसार के असुधता ले बच गे हवय, पर ओमन फेर ओम फंसके ओकर बस म हो जाथें, त ओमन के दसा ह आखरी म, ओमन के सुरू के दसा ले घलो अऊ खराप हो जाही। 21ओमन बर बने होतसि का ओमन धरमीपन के रसता ला नई जाने रहतिनि, एकर बदले काओला जाने के बाद, पबतिर हुकूम के पालन नई करना, जऊन ह ओमन ला दिये गे रहिसि। 22ओमन बर ए कहावत सही बईठथे: “कुंर ह अपन

उछरे चीज ला खाय बर फेर लहुंठथे,” अऊ “नहलाय-धूलाय माई सुरा ह चखिला माते बर फेर चले जाथे।”

परभू के दिन

3 हे मयारू संगवारीमन हो, एह दूसरा चिट्ठी ए, जऊन ला मेंह तुमन ला लिखित हवंव। मेंह दूनों चिट्ठी ए सुरता कराय बर लिखे हवंव का तुमन सही सोच-बिचार म बढ़त जावव। 2मेंह चाहथेव का तुमन ओ बचनमन ला सुरता करव, जऊन ह बहुंत पहिली पबतिर अगमजानीमन के दुवारा कहे गे रहिसि अऊ हमर परभू अऊ उद्धार करइया के हुकूम ला सुरता करव, जऊन ह तुमन ला प्रेरतिमन के जरिये दिये गे रहिसि।

3सबले पहिली, तुमन ए जरूर समझ लेवव का आखरी के दिन म ठट्ठा करइयामन आहीं अऊ ठट्ठा करत अपन खुद के खराप ईछा ला पूरा करहीं। 4ओमन कहहीं, “ओह आय के वायदा करे रहिसि, पर का होईस ओकर अवई के? हमर पुरखामन के मरे के समय ले, हर एक चीज ह वइसनेच हवय, जइसने ए संसार के सुरू ले रहिसि।” 5पर ओमन जान-बूझ के ए बात ला भुला जाथें का बहुंत पहिली, परमेसर के बचन के दुवारा अकासमन बनाय गीन अऊ धरती ह पानी म ले अऊ पानी के संग बनाय गीस। 6पानी के दुवारा ही ओ समय के संसार म भयंकर बाढ़ आईस अऊ ओह नास हो गीस। 7ओहीच बचन के दुवारा, ए समय के अकासमन अऊ धरती ला आगी म नास करे बर बचाके रखे गे हवय। ओमन नियाय के दिन बर अऊ भक्तिहीन मनखेमन के बनिास बर रखे गे हवय।

8पर हे मयारू संगवारीमन हो, ए बात ला झन भूलव: परभू के नजर म एक दिन ह एक हजार साल सहीं अय, अऊ एक हजार साल ह एक दिन सहीं अय। 9परभू ह अपन वायदा ला पूरा करे बर देरी नई करय, जइसने का कुछ मनखेमन समझत हवय। पर ओह तुम्हर संग धीरज धरे हवय, अऊ नई चाहथे

क़ि कोनो नास होवयं, पर ओह चाहथे क़ि हर एक ज़न ला पछताप करे के मऊका मलिय।

10पर परभू के दिन ह चोर के सहीं अचानक आ जाही। अकासमन एक गरजन के संग गायब हो जाहीं। सार-तत्त्व मन आगी के दुवारा नास हो जाहीं। धरती अऊ एम के हर एक चीज ला जला दयि जाही।

11जब हर चीज ह, ए कसिम ले नास करे जाही, त तुमन ला चाही क़ि पबतिर अऊ भक्तमिय जनिगी जीयव, 12जइसने क़ि तुमन परमेसर के दिन के बाट जोहथव अऊ भरसक कोससि करथव क़ि एह जल्दी आवय। ओ दिन, अकासमन आगी म जरके नास हो जाहीं, अऊ सार-तत्त्व मन गरमी के मारे टघल जाहीं। 13पर परमेसर के परतगियां के मुताबकि, हमन एक नवां अकास अऊ नवां धरती के बाट जोहथन, जहिं सरिपि धरमीपन होही।

14एकरसेति, हे मयारू संगवारीमन हो, जब तुमन ए बात के बाट जोहथव, त भरसक कोससि करव क़ि तुमन नसिकलंक अऊ नरिदोस पाय जावव अऊ तुमन ला ओकर संग सांति मलिय। 15अपन मन म ए समझ लेवव क़ि हमर परभू के धीरज के मतलब

उद्धार होथे, जइसने क़ि हमर मयारू भाई पौलुस घलो परमेसर के दुवारा दयि बुद्धि के मुताबकि तुमन ला लिखे हवय। 16ओह अपन जम्मो चट्ठी म, ए बातमन ला बतावत ओही कसिम ले लिखथे। ओकर चट्ठीमन म कुछू अइसने बातमन हवयं, जऊन ला समझना कठिन ए। अगयिनी अऊ अस्थिर मनखेमन एकर गलत मतलब नकारथें, जइसने क़ि ओमन परमेसर के बचन के आने भागमन ला घलो करथें, अऊ ए कसिम ले ओमन अपन बनावस करथें। 17एकरसेति, हे मयारू संगवारीमन हो, जब तुमन एला पहिली ले जानथव, त सचेत रहव ताक़ि तुमन दुस्र मनखेमन के बहकावा म ज़न आवव अऊ अपन बसिवास के स्थिरता ला ज़न गवांवव। 18पर हमर परभू अऊ उद्धार करइया यीसू मसीह के अनुग्रह अऊ गयान म बढ़त जावव। ओकर महिमा अभी अऊ सदाकाल तक होवत रहय। आमीन।